International Journal of Applied Research 2022; 8(10): 01-03

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(10): 01-03
www.allresearchjournal.com
Received: 02-06-2022
Accepted: 05-07-2022

मेघा झा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मेघा झा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

पद्मश्री उषाकिरण खानक 'दूर्वाक्षत' उपन्यासमे नारी–जागरण

मेघा झा

सारांश
मंगला जे एहि उपन्यासक नायिका छथि ओ अपन कर्तव्य कैं बच्चे सँ बुझैत छलीह। तैं स्कूल जाइ सँ पहिने घरक सबटा काज सम्पन्न क' भानस–भात क' स्कूल जाइत छलीह। नगर भरि कैं ओ दुलारू बेटी छलीह। पढ़य–लिखय मे मेधावी छलीह। क्लास मे हरदम फस्ट करैत छलीह। हुनक विवाह एक व्यक्तित्वहीन लोक सँ भ' गेलनि जनिक नाम त्रिवेणी झा छलनि। लोक हुनका मजाक सँ टिरकू झा कहैत छलनि। दुनू दकमदम अगल छल। मंगला कैं अपन पति सँ सेहो खुश नहि छलीह। उषाकिरण खान मंगलाक सौन्दर्यक वर्णन करैत लिखने छथि – पिंडश्याम रंग छनि। आँखि घुमरल–घुमरल छनि। घनगर केस छनि। आँखि कैं घुमरल–घुमरल कहलनि, से संतोषजनक नहि लगैत अछि कारण केस घुमरल होइत अछि, आँखि नहि। मंगला कैं माय नहि छथिन मुदा अंत मे विभिन्न सूत्र सँ पता लगैत अछि जे ओ जीवित छथि तऽ ओ अपन माय सँ मिलबाक हेतु बेचैन भऽ जाइत छथि आ अपन माय कैं पता लगबय लगैत छथि। मंगला कैं पता लगैत अछि जे ओकर भाई आ बाप मिलि कऽ ओकर माय पर झूठक आरोप लगा कऽ घर सँ बेज्जति कय निकालि देने छैक। भाई कहलनि जे दुनू बेटीक चरित्र माये सन छनि आ मंगला कैं आ माय संग बहिनो कैं बहुता किछु कहि अपमानित कयलनि। ई सभ सुनि मंगला कैं बहुत दुख होय छनि। पिता पर विश्वास छलनि जे ओ हिनक संग देथिन मुदा पिता सेहो मंगला कैं अपमानित कयलनि। पति द्वारा ओकर माय पर झूठक आरोप लगेनाइ जे माय जेना अपन पति–बेटा सँ विमुख भइयो कऽ अपन प्रेमी लेल जान दऽ देलक। ई सुनि मंगला कैं अपन पति सँ आओर घृणा भऽ जाइत छैक। चारू कात सँ विरोध आ अपमानक आगि मे जरि कऽ ओ आओर निखरि गेलीह। हुनका सरकारी नौकरी भऽ जाइत छनि। ओ अंत मे अपन पति कैं तलाक दऽ कऽ पिता–भाई सभ कैं परित्याग कऽ नव जीवनक आरम्भ करैत छथि। एहि सँ बुझना जाइत अछि जे मंगला एक आत्मानिर्भर महिला छथि।

कूटशब्द : दूर्वाक्षत, उपन्यासक, मेधावी छलीह, मंगला

प्रस्तावना
दूर्वाक्षत उपन्यासक नायिका मंगला छथि। हुनक सम्पूर्ण चरित्र कैं हम एतय देखाबऽ जा रहल छी। हुनका मे की गुण–दोष छनि? तकर एतय हम विस्तार सँ चित्रण कऽ कयने छी। एहि विषय पर लिखबाक पाछू हमर इएह उद्देश्य अछि जे पद्मश्री उषाकिरण खान मंगलाक चरित्र कैं कोन प्रकारेँ देखयबाक प्रयास कयलनि अछि? मंगला अपन जीवन मे कोन तरहेँ संघर्ष कयलनि ? पुरूष वर्ग सँ कोना फराक भऽ अपन जीवन कैं सही मार्ग देलनि। एहि क्रममे हुनाक चरित्र मे कोन प्रकारक निखार अयलनि? कोना ओ अपन नारी–शक्ति प्रदर्शित कयलनि? कोना ओ अपन पिता, भाई आ पति सँ अपन हक लेल या अपन माता लेल जे विलुप्त छलथि तिनका लेल अपन दम पर संघर्ष कयलनि। कोना मंगला अपन नारी–शक्ति कैं प्रदर्शन कयलनि? से एतय हम वर्णन कऽ रहल छी।

विषय प्रवेश
मैथिली साहित्य जगतमे उषाकिरण खानक दोसर उपन्यास 'दूर्वाक्षत' अछि। एहि उपन्यासमे मुख्य रुपसँ मंगलाक "मनोविश्लेषणात्मक चरित्र–चित्रण कएल गेल अछि जे अपन भाइ ओ पिता द्वारा अपन माता पर कएल गेल दुर्व्यवहार ओ अपमानसँ तथा अपन दाम्पत्य–जीवनक विसंगतिसँ क्रान्तिदर्शिनी भए समस्त पुरुष–परिवारकेँ त्यागि, अपन पतिसँ सेहो तलाक लए अपने स्वतंत्र ओ आत्मनिर्भर जीवन स्थापित करैत अछि एवं अपन परित्यक्ता माताकेँ उद्धार करबाक निश्चय करैत अछि। वस्तुतः ई उपन्यास आधुनिक नारी–जागरणक क्रान्ति दर्शन थिक जे युग–युगसँ पुरुष समाजक अत्याचारक पाटपर पिसाइत आबि रहल अछि।"[1]
एहि उपन्यासक मुख्य पात्र 'मंगला छथि। मंगलाक स्कूलमे प्रतिष्ठित हेडमास्टर छलथिन। मंगला ओहि नगरक दुलारू बेटी छलथि। हुनक माय नहि छलथिन। ताहि दुआरे ओ अपन घरक सभ काज क क स्कूल जाइत छलीह। स्वभावसँ बुधियार आ पढ़य–लिखयमे मेधावी छात्रा छलीह।

हुनक सौन्दर्यक वर्णन करैत लेखिका कहैत छथि– "पिंड श्याम रंगक छोट मुँहमे घुरमल–घुरमल कारी आँखि देखबा योग्य छनि। डाँड़सँ नीचा धरि घनगर रंगक केस छनि आ एकटा सधल चलि छनि।"[2]

मंगला जखन आई. ए.मे पढैत छलथि तहन हुनक बिआह एम. ए., एम एड. पास त्रिवेणी कुमार झासँ भेल छलनि। त्रिवेणी कुमार नगरमे टिरकू झाकेँ नामसँ जानल जाइत छलाह। पढ़ल–लिखल भेलहुँपर व्यक्तित्वहीन 'हें–हें' टाइपक लोक छलथि। बकरी वा बिलाड़ि सन मुँह–कान बनौने ओ सालो भरि कमीज–पेंट–टाइमे एकदम टिप–टॉप रहैत छलाह। विचारसँ दकियानूस, जरनिहार आ गँवार छलाह। भकोल चेहरा लेने डोरी जकाँ कतहु पड़ल आ विसंगतिक कारणेँ वैवाहिक जीवनमे संकटक मेघ घुरिआए लगल छलनि। पारस्परिक मान–सम्मान आ विश्वासक बान्ह ढ़हिते प्रेममे संशयक तेहन ने घून लागल छलनि जे बिआह रूग्न सामाजिक व्यवस्था चरमरा जाइत छैक। "विवाहक इएह अनुभव छनि मंगलाकेँ जेना सौंसे देहपर साँपक ससरैत, जेना साँपक गिजगिजाह देहसँ सटल देह, जेना ढ़ोढ़िया साँपक भोथरायल दंश आ ताहिसँ छटपटाइत, औनाइत मंगला। छातीपर जेना बड़का पाथर राखल छलनि। पाथर तरसँ अहुरिया काटैत जल अदहन जकाँ खौलल जाइत छलनि।"[3]

मंगला आई. ए.मे प्रथम श्रेणीमे पास कयलनि त हुनक संगी सभ बधाई देबय आयल छलीह। मंगला प्रसन्न भ सभकेँ मधुर खुओलनि मुदा एहि बातसँ हुनक पति आ पिता कोनो खुश नहि भेलाह। मंगालाक पिता जी तमसा गेलाह। भोजन सादा रहनि। ताहि दुवारे पतिक सामने डटलथिन। एहि बातसँ मंगलाकेँ बहुत दुख भेलनि। "एक्को बेर पतिदेव बजबो नहि कयलनि। कमसँ–कम कहबाक चाहैत छलनि जे कोनो बात नहि, हम की आबहु पाहुन छी मुदा किछु नहि कहलनि। कोनो प्रतिक्रिया नहि देखौलनि। ने प्रथम श्रेणीमे पास होयबाक प्रसन्नता। मंगलाक मोनमे प्रथम दड़ारिक सृजन भ गेल आइ। भाई दिस देखलनि मंगला, ओहो तमसायल जकाँ चेहरा बिगाड़ने बैसल रहनि। की बात छैक, किछु बुझि नहि रहलीह अछि। मोन भरि अयलनि, एकटा आघात लगलनि।"[4]

ओहि राति मंगला उदास रहथि त हुनक पति पुछलथिन जे किया उदास छी? माय मोन पड़ि रहल छथि। मंगला मनमे विचारलनि कि आइ किया एते मायक चर्चा क रहल छथि? हिनका बुझल छनि कि हमर माय नहि छथि मुदा एखन ई प्रश्न मंगलाक अन्तरतमकेँ छूबि लेलकनि। टिरकू झा पुछैत छथि– "अहाँक मायक फोटो किया नहि अछि? ने कोने अलबममे, ने कतहु देबालपर टाँगल?"[5] मंगलाकेँ ई प्रश्न जेना अन्दरसँ झकझोरि दैत अछि मुदा ओ तैयो अपनाकेँ उपरसँ दृढ़ देखबैत छथि।

मंगला अपन भौजीसँ बेर–बेर अपन मायक विषयमे पुछैत छथि त भौजीसँ हुनका संतोषजनक उत्तर नहि भेटलासँ भौजीपर हुनका शंका होइत छनि।

मंगलाक छोट बहिन मंजुलाक बियाहक खबर सुनि मंगला अकचका जाइत छथि। ओकरा मनमे बियाहक प्रति जेना घृणा छलनि। बिआहक हुनका नीक अनुभव नहि छलनि। भाइक व्यवहार दुनू बहिनक प्रति नीक नहि रहनि। दुनू बहिन केँ कानैत देखि भाइ तामसे गरजए लागल। मंगला तहियो साहस क पुछलनि – "कत्त बिआह क रहल छिएक मंजुलाकेँ? वर केहन छथिन? "तोरा कोन मतलब छौक? भाइ तामसे ठाढ़ भ गेलथिन। मंजुला हमर छोट बहिन अछि।" आर तनि गेलीह।[6]

मंगलाकेँ मनमे एक प्रश्न बेर–बेर अबैत छलनि जे हुनक मायक एको फोटो किया नहि छनि। पति हुनका कहलकनि जे हमरा बुझल अछि जे अहाँक मायकेँ एको फोटो कियाक नहि अछि। लोक सभ कहैत छथि जे अहाँक माय जीवित छथि। एहि क्रममे हुनका अपन पति जे बेसी आत्मीयता भ गेलनि मुदा एक दिन मंजुला हुनकासँ पुछलनि कि विपिन बाबू केहन लोक छथिन? मंगला कहलनि– ओ हमर शिक्षक छथि। किया ई कहैत छलाह जे नीक लोक नहि छथिन। टिरकु झा कहैत छलथिन। रातिमे टिरकू झा सँ पुछलनि जे विपिन बाबू केहन लोक छथिन? पति कहलनि हँ कने–मने जनै छियैन जे ओ खराब आदमी छथिन– "असली बात जे छैक से ई जे अहाँक माय जाहि शम्भू बाबूक कारणेँ निष्कासित भेलीह तनिके ई बेटा छथिन। हुनकर स्वर फुसफुसाहट मे बदलि गेलनि।"[7] मंगला अन्दरसँ जेना टुटि गेली आ कानय लगलीह।

एक दिन मंजुलाक पति कॉलेज सँ दौड़ल घर आयल आ कहलक जे विश्वविद्यालय आब नीक लोककेँ जायबाला नहि रहि गेल अछि। माधुरी केँ बारे मे कहलनि जे सौंसे हल्ला छैक जे अध्यक्ष पदक हारल प्रत्याशी विनोद बिहारी ओकरा रास्तासँ उठबा लेबाक धमकी देने छैक। मंगला माधुरीक पक्ष लैत कहलनि जे ओ नीक घरक लड़की छैक। ओकरा कियो किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि। मंजुलाक पति ओकरा कॉलेज जयबाक लेल मना क दैत छथि जे हमरा गाम–घरक बहुत लोक एत' रहैत छथि। हमरा बदनामी नहि नीक लगैत अछि। ओ मंगला पर गरजि क बजलनि जे अहाँ जकाँ स्वच्छन्द मंजुला रहथु से हमरा पसिन्न नहि। मंगलाक जीवनक कतेको समस्या सँ घेरल छल। ई एकटा आर समस्या आबि गेल।

मंजुला केँ कॉलेज नहि जाथि देखथि तऽ हुनक पिता जी पुछैत छथिन कि कॉलेज किया नहि जाइ छथि? पढ़ाइ हर्जा होइत हेतै। तँ मंगला कहलनि जे ओझा जी ओकरा कॉलेज जाय सँ मना क देने छथिन। पिता जी उदास भ गेला। मंगला सोचैत छथि जे "अपन ई अधिकार च्युत होम' देब' नहि चाहैत छथि ओ। संगहि अधिकार आ कर्त्तव्यक एहि विवाद मे स्त्रीगण बहैत धारा मे रबड़ जकाँ ससरल जाइत छथि। सोचबाक ने शक्ति छनि ने इच्छा। मंगला के एक मात्र एकेटा बात सालैत छनि जे एक संग पोसा–बढ़िक' मंजुला एहन उदासीन किएक छथि। उदासीन नहि छथि तँ एक्को बेर प्रतिरोध किएक, ने कयलनि? मंगला के बड़ आश्चर्य होइत छनि। मंजुलाक अक्किलपर एना कयने कोना चलतैक?"[8]

एक दिन दुनू साढू कोनो विषयपर गप्प करैत छलाह। मंगला के बुझि पड़लनि कि कोनो गंभीर विषय पर गप चलि रहल छनि। ओ सुन' लगलीह। कहैत छलाह जे – "शम्भू बाबू जे जमीन हिनका मायक नाम किनने छलथिन ताहि पर पहिने हिनकर बेटा छात्रावास आ होटल बनायबाक योजना बनौलथिन। माय सँ जखन कर्जाक कागज पर हस्ताक्षर लेब' लगलथिन त ओ एकर प्रतिवाद कयलथिन। ताहि पर बेटा मायकेँ बड़ बेइज्जति कयलथिन। तखन बुझि पड़ैत छैक माय शम्भू बाबू केँ किछु कहने होयथिन। फेर बेटा–बाप मिलि–जुलि क जमीन बेचबाक चेष्टा कयलथिन, जे माय नइ होब' देलथिन। ताबत बेटा बाहर नौकरी करय लगलाह, बिआह कयलनि आ एक दिन जखन माय किन्नहुँ शम्भूबाबूक जमीन नहि कब्जा होब' देलथिन, तखन बेटा जबरदस्ती रातिमे पिस्तौलक हाथे मायकेँ बाहर क देलथिन।"[9] दुनू बहिनक विषयमे कहैत छथि जे दुनू बेटीक चरित्र माये सन छनि। माय जेना अपना बेटा–पति सँ विमुख भइयोक' प्रेमीक लेल जान द' देलकै, तहिना ईहो छौंड़ी सभ छैक। ई सभ बात टिरकु झा कहैत छथि। मंगला केँ फेर सँ अपन पति सँ जेना घृणा भ' जाइत छनि। ओ अपन मनमे एक संकल्प क लैत छथि जे ई मनुक्ख संग नहि रहि सकैत छी। क्रोध सँ मन भरि गेल छलनि।

एक दिन मंगलाक छोट भाई जे अपनाके अभिभावक बुझ' लागल छलाह से मंगला के बुझाब' लागल जे अहाँ ओझा जीके उचित सम्मान दिऔ। मंगला तमसा गेल आ कहलक अहाँ जेठ भाइ होबाक ई मतलब नहि जे अहाँ हमरा मामलामे हस्तक्षेप करब। हम करबे अपमान एक सौ करबनि। भाई कहलनि– "अहाँकेँ देखि रहल छी, बड़ स्वच्छंद भ' गेलहुँ। से अपना माय जकाँ जँ बिगड़ल स्वभाव रखलहुँ त' हमरा लोकनि केँ ठीक कर' सेहो अबैत अछि।"

'वाह रे माय के बेटा ! अहाँ के त' लाजे मरि जेबाक चाही जे अपना माय के निष्कासितक' हुनकापर कलंक लगबै छियनि !"

"कलंक के कलंक कहल जयतै, अबीर–गुलाल नहि। हमरा ठीके लाज होइत अछि जे हम ओहन कलंकनीक कोखिसँ उत्पन्न भेलहुँ। अहाँ ओकरा रास्तापर जयबाक चेष्टा करब त' दुनू टाँग काटि देब।"

"से त' नहियेक' सकब। हमरा अहाँ सभ लय कोनो मोह–ममता नहि अछि। हम अहाँसँ मायक संगे अपनो बदला ल' लेब। ओ अभागलि माय हमरा सनक सन्तान प्राप्तक' एतबा शक्ति अर्जितक' लेलक अछि जे ओकरा प्रति कयल दुर्व्यवहारक मोल अहाँ सभकेँ चुकब' पड़त।"[10] मंगलाक मनमे प्रतिशोधक भावना जागि उठैत छनि। ई प्रतिशोध अपन मायक प्रति छनि।

जखन पिता जी अयलाह त ओहो मंगला के बहुत किछु कहलनि जे – "अहाँ की सुनब, अपने हम देखि रहल छी। अहाँ बढ़ि–चढ़िक' बात करैत छियनि। ई अधलाह अछि। स्त्रीगणक आभूषण लाज आ विनम्रता छैक से बूझल अछि की नहि? अहाँक शरीरक ई रक्तदोष अछि। से हम बुझैत छी मुदा हमरा आब अपना पर क्षोभ होइत अछि जे हम किएक एहन स्वच्छंद बना देलहुँ। जाउ आगाँसँ, हम किछु नहि सुन' चाहैत छी।"

मंगला बाबूसँ आशा करैत छलीह न्यायक? जे बाबू अपना पत्नी केँ अवमाननाक' घरसँ बहारक' देने छलथिन? तखन किएक बेटी सभकेँ रखलथिन? किएक पढ़ओलनि–लिखओलनि? चारुकातसँ विरोध आ अपमानक पंचाग्निमे मंगला कुन्दन जकाँ आर निखरि गेलि छलीह।"[11]

मंगला तेहन चुप आ उदासीन भ गेलि छलीह आ अप्पन तेहन अनिवार्यता बना लेने छलीह जे कियो किछु नहि बाजनि। बुझि पड़ैत अछि जे घरक स्थिति सामान्य छैक किन्तु सहजहिं भीतर उतरलापर ज्ञात भ सकैत छलैक जे ई घर ओहने स्थितिमे छलैक जेना सासे टाल तर–तरे आगिमे जरिक' अपन पूर्वरूपाकारमे ठाढ़ होइक हाथसँ छुबिते भरभराक' छाउर।

मंगला के नौकरी भ गेल रहिन। पिता जी सँ आज्ञा लए क ओ गेलीह। अंत में टिरकू झासँ ओ तलाक लए क' अपनाकेँ ओहि जबरदस्तीक बंधन सँ मुक्त कयलनि। मंगला एक नव रास्ता चुनि क जीवनक आनंद लेबय लगलीह।

संदर्भ ग्रंथक सूची

1. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ संख्या – 375–376.
2. दूर्वाक्षत – उषाकिरण खान, पृष्ठ संख्या – 2
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 19
4. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 9
5. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 11
6. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 6
7. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 27
8. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 35–36
9. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 40
10. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 42
11. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 43